RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-12
December-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i12.042

वृद्धावस्था का मार्मिक दस्तावेज 'शटल'

डॉ. श्रुति शर्मा

सह आचार्य, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 14 December 2020

Keywords
वृद्धावस्था, उत्तरआधुनिकता, सहानुभूति, अकेलापन, निराशा।

ABSTRACT

'शटल' वृद्धजीवन की मार्मिक कथा है, जो एक व्यक्ति की नहीं पूरे समाज की दास्तान है। भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में हमारे नैतिक मूल्यों का क्षरण बहुत ही तीव्र गति से हो रहा है। आज समाज में बुजुर्गों की जो दयनीय स्थिति हो गयी है इस भयावह स्थिति से छुटकारा पाने के लिए हमें इस समस्या की तह तक पहुँचना होगा। युगद्रष्टा कथाकार नरेन्द्र कोहली ने आने वाले समय की झाँकी अपनी कहानी 'शटल' के माध्यम से प्रस्तुत की है। समाज में होनेवाली विसंगतियों को जनता तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम कहानी है। समसामयिक समस्याओं तथा घटनाओं को सफल रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने से ही साहित्य अर्थगत होता है। समकालीन कहानीकार मनुष्य जीवन के सभी पहलुओं को अपनी रचनाओं के द्वारा व्यक्त करता है जिनमें वृद्धावस्था भी शामिल है। बुजुर्गों के उपेक्षित जीवन और उनकी अस्मिता को कहानियों में उठाया जा रहा है साथ ही परिवार तथा समाज के द्वारा उनके ऊपर किये जाने वाले अत्याचारों के विरुद्ध भी सशक्त रूप से आवाज़ उठ रही है।

वृद्ध विमर्श का अर्थ है वृद्धावस्था की परिस्थितियों, घटनाओं आदि का चिन्तन करना अर्थात् वृद्धावस्था की समस्याओं को समझकर उनके लिए उचित समाधान करना। आज के युग में वृद्ध विमर्श अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि आज हम इतने व्यस्त हो गए हैं कि हमारे पास बुजुर्गों को समझने का समय ही नहीं है। इसका मुख्य कारण संयुक्त परिवारों का टूटना है। इसी कारण हम बुजुर्गों की तरफ न ही ध्यान दे पा रहे हैं और न ही उनके अनुभव व ज्ञान का लाभ उठा पा रहे हैं। व्यावसायिक जीवन की व्यस्तता के कारण हमारे पास पुरानी तथा नई पीढ़ी में सामंजस्य बिठाने का समय नहीं है। परिणामस्वरूप हमारी पीढ़ियाँ एक दूसरे के नजदीक आने की अपेक्षा दूर होती जा रही हैं। यह खाईं हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर ले जा रही है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम अपने बुजुर्गों के ज्ञान तथा अनुभव को दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित नहीं कर पा रहे हैं।

वृद्धावस्था बचपन से जवानी और जवानी से बुढ़ापे तक के अनुभवों तथा गुणों का पुंज होता है। परन्तु एकल परिवारों के कारण हमारे समाज से सभ्यता और संस्कृति लुप्त होते जा रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों के साथ बैठकर विचार साझा नहीं कर पाती, जिसके कारण मूल्यों का विघटन हो रहा है। समाज की प्रत्येक समस्या का प्रारम्भ घर से ही होता है। आज युवा तथा वुद्ध दोनों का जीवन अंधकार की ओर जा रहा है। आज का समाज वृद्धावस्था को समस्या की दृष्टि से देखता है और उन्हें बोझ समझता है। समाज में उचित सम्मान न मिलने के कारण वृद्ध व्यक्तियों का जीवन निराशा की तरफ जा रहा है।

मनुष्य के जीवन को चार अवस्थाओं में बाँटा गया है–बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था। वृद्धावस्था के अतिरिक्त अन्य सभी अवस्थाओं में मनुष्य अपना काम स्वयं कर सकता है और परिवार की देखभाल भी कर सकता है इसलिए सभी लोग उसको पसन्द करते हैं और उसका आदर–सम्मान भी करते हैं। लेकिन वृद्धावस्था में पहुँचते ही मनुष्य दूसरों पर आश्रित हो जाता है । ऐसी हालत में कुछ दिनों के बाद वृद्धों को लोग बोझ समझने लगते हैं। धीरे–धीरे वह समाज से तथा परिवार से अन्य और अकेला हो जाता है। एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका के अनुसार ''Old Age also called senescence in human beings] the final stage of the normal life span''. इस अवस्था को मनुष्य जीवन का आखिरी पायदान कह सकते हैं। वृद्धावस्था आते ही मनुष्य की शारिरिक तथा मानसिक क्षमताएँ विकट होने लगती हैं। आधुनिक समाज जो चीज़ अपने लिए अवश्यक है, उसे अपनाता है और बाकी को सिर्फ बेकार मानता है। संबन्धों के बीच भी इसका प्रभाव पड़ा है इसलिए घर पर व्यर्थ बैठे बुजुर्ग, नयी पीढ़ी के लिए भारी बोझ प्रतीत होता है। अतः इस विचार को छोड़कर पुरानी पीढ़ी की तरह सोचे बिना यह समस्या हल नहीं हो सकती। वृद्धों को भी अपना दृष्टिकोण बदलना बहुत ज़रूरी है क्योंकि अपनी कमज़ोरियों को खुद समझने से ही उनकी समस्या का समाधान हो सकता है।

समकालीन कहानीकार नरेन्द्र कोहली ने 'शटल' कहानी में वृद्धावस्था की समस्याओं को उभारने का प्रयास किया है। ईशरदास के अकेलेपन की पीड़ा को व्यक्त करते हुए लेखक कहता है–''जब से बढ़ती हुई बीमारी के कारण ईशरदास को काम–धंधा छोड़ना पड़ा था, तब से वह बहुत अकेला हो गया था। पुस्तकें अब भी घर में आती थीं, पर वे

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उसके बेटों की पसंद की होती थी। उसकी पसंद और बेटों की पसंद में बहुत अंतर था। उसके बेटे जो प्रेम–कथाएँ पढ़ते थे, ईशरदास को वे एकदम नापसंद थी।''[1]

उत्तरआधुनिकता के प्रभाव से आज समाज में संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, पारिवारिक विघटन तेजी से हो रहा है। ईशरदास के भी चार बेटे हैं जिनमें तीन बेटों का विवाह हो चुका है। बड़े दो विवाह के बाद अलग हो चुके हैं। ईशरदास–भागवन्ती के साथ तीसरा बेटा रहता है। वह भी मन–ही–मन अलग होने के सपने सँजो रहा है। चौथे बेटे के विवाह की बात चल रही है।

उम्र बढ़ने के कारण वृद्धों का स्वभाव बच्चों जैसा हो जाता है, उनकी इच्छा होती है कि कोई उनसे भी दो बातें करे। उनके साथ बैठे लेकिन इस भागदौड़ भरी जिन्दगी में सभी अपने काम–धंधों में इतने व्यस्त हो गये हैं कि उनके पास वृद्ध माता–पिता के लिए समयाभाव तो है साथ ही माँ–बाप को भी बाँट लेना चाहते हैं। नरेन्द्र कोहली लिखते हैं–"और जब भागवन्ती बड़े बेटे के पास चली जाती है तो इस घर में उससे दो बातें करने वाला भी कोई नहीं रह जाता। ईशरदास को अकेलापन बहुत अखरता है। वह अकसर सोचता है–उसके ये बेटे, जिनकी शादियों को दो–दो, चार–चार साल हुए हैं, वे यह क्यों नहीं सोचते कि उनके बाप की शादी को पैंतीस साल हो गये हैं। ये साले अभी से अपनी बीवियों से एक दिन भी अलग नहीं रह सकते तो वह, जिसने पैंतीस साल में अपने आपको एकदम आश्रित बना लिया है–कैसे भागवन्ती के बिना रह सकता है। बुढ़ापे में और कोई साथ बैठकर प्रसन्न भी नहीं है–वे उसकी पैंतीस वर्षों की संगिनी को भी उससे अलग करने पर तुले हुए हैं।"[2]

ईशरदास अपनी पीड़ा व्यक्त करता हुआ कहता है–"अभी पिछले ही दिनों, भागवन्ती दूसरे बेटे के घर गई हुई थी। जब हफ्ते–भर के बाद वह यह कहकर कि, "तुम्हारे बाबूजी का हालचाल पूछ आऊँ", उससे मिलने आयी थी तो कैसा भूचाल आया था घर में।... साले समझते हैं कि बूढ़े सनक गये हैं।"[3]

नयी पीढ़ी आधुनिकता के प्रभाव से स्वकेन्द्रति हो गयी है। अपनी पत्नी और पुत्र से मोह के आगे माता–पिता के एहसानों को भूल जाते हैं। बहुएँ भी अपने कर्तव्य का ठीक से निर्वाह नहीं करती हैं। जब भागवन्ती घर में रहती है तो ईशरदास का पूरा ख्याल रखती है, उनकी पसंद–नापसंद का ध्यान रखती है लेकिन जब वह किसी बेटे के यहाँ होती है उस समय उसका कोई ठीक से ध्यान नहीं रखता। कथाकार लिखता है–"जब भागवन्ती चली जाती है तो ईशरदास मात्र अकेला ही नहीं रह जाता, और बातों की भी कितनी मुश्किल हो जाती है। सवेरे समय पर चाय नहीं मिलती। बहू अपने पति को चाय देकर समझ लेती है कि अब और किसी को कोई जरूरत ही नहीं रही। भागवन्ती सबको खिलाने से पहले, उसे रसोई में बुलाकर अपनी देख–रेख में खाना खिला देती है। वह जानती है कि उसे कौन–सी चीज नुकसान करती है, किस चीज में उसे कितना नमक चाहिए और कितनी मिर्च। पर बहू उसे रसोई में बुलाकर नहीं खिला सकती। वह थाली सजाकर उसकी चारपाई पर ही रख जाती है। कभी पानी देना भूल जाती है तो कभी फुलका। कभी सब्जी कम हो जाती है तो कभी सब्जी में नमक–मिर्च। जो कुछ मिलता है, वह चुपचाप खा लेता है। दो फुलके खाकर पाँच–दस मिनट बैठा प्रतीक्षा करता रहता है कि शायद कोई फुलका लेकर आए। या सब्जी कम हो जाए तो उनकी राह देखता रहता है पर जब कोई नहीं आता तो थाली उठाकर रसोई में रख आता है। उसे रसोई में थाली रखते देखकर बहू को भी याद आ जाता है–"बाबूजी! सब्जी! बाबूजी! फुल्का...."[4]

इस तरह के व्यवहार से वृद्धों को बहुत कष्ट होता है। अतः युवा पीढ़ी को वृद्धों की भावनाओं का समझना होगा। ईशरदास का भरा–पूरा परिवार होते हुए भी वह अकेलेपन की पीड़ा से ग्रस्त है क्योंकि वह संकोच के कारण बहुओं से कुछ माँग नहीं सकता और उसकी कोई भी बहू यह नहीं जानती कि उसे किस समय क्या चाहिए। न कोई जानना चाहती है...। वृद्धावस्था में पति–पत्नी को एक दूसरे की आवश्यकता अधिक हो जाती है। भागवन्ती बड़े बटे के घर गयी है और ईशरदास अकेले हैं। बड़ी बहू की तबीयत खराब है। ईशरदास को तीसरे बेटे के यहाँ ठीक से खानपान और सम्मान नहीं मिल पाता और उन्हें भागवन्ती की याद आती है। ईशरदास सोचता है–"आखिर इस तरह कितने दिन काट सकता है। बड़ी बहू की तबीयत जाने कब तक खराब चले। कौन जानता है कि वे लोग तबीयत ठीक करना ही न चाहते हों, वह कब तक इस प्रकार घुटता रहेगा। उसे लगा, उसका कमरा किसी ने बाहर से बंद करर दिया है और वह कमरा न रहकर पिंजरा बन गया है। फिर वह पिंजरा दिन–प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है और वह उसमें दबता जा रहा है। वह इस घुटन में और नहीं रह सकता..."[5]

वृद्धावस्था में वृद्ध व्यक्ति भी चाहता है कि उसके पास कोई बैठे उससे बातचीत करे, लेकिन युवापीढ़ी अपने दिनचर्या में इतनी व्यस्त है कि उनके पास वृद्ध माता–पिता के पास बैठने तथा उनसे दो मिनट बात करने का भी वक्त नहीं है। ईशरदास सोचता है–"तो क्यों न वह थोड़ी देर के लिए बड़े बेटे के घर चला जाए। बड़ी बहू बीमार है तो आखिर ससुर के नाते उसका भी तो कर्तव्य है कि उसका हाल–चाल पूछने जाए। जब उसकी बेटी की तबीयत ठीक नहीं होती तो क्या वह उसे देखने नहीं जाता? आखिर बहू और बेटी में अन्तर भी क्या है? फिर वहाँ भागवन्ती है। कुछ देर उसके पास भी बैठ आएगा। जाने उसकी तबीयत कैसी होगी। बेचारी को इस बुढ़ापे में भी इतना काम करना पड़ता है।"[6]

वृद्धावस्था में थोड़ी दूर चलना या कोई काम करना बहुत कठिन होता है। ईशरदास उसकी परवाह किये बिना मन बहुत सपने सँजोये बड़े बेटे के घर जाता है कि वहाँ एक रात

रुक जाएगा और सबका हाल पूछ आएगा। वह बड़ी बहू का हाल जानने आया था लेकिन वहाँ पहुँचकर उसे लगा–"उसे भागवन्ती का हाल पूछना चाहिए, बहू का नहीं। वह जानता था कि बहू की तबीयत ठीक नहीं है और भागवन्ती यहाँ काम करने आयी है। पर देखने से उसे लगा कि भागवन्ती बीमार है, और बहू को कोई तकलीफ नहीं है। भागवन्ती बहुत ही कमजोर लग रही थी। उसकी तबीयत भी गिरी–गिरी थी।"[7]

आज की वास्तविक स्थिति ऐसी हो गयी है कि व्यक्ति हर कार्य में अपना स्वार्थ देखता है, जहाँ एकल परिवार है और पति–पत्नी दोनों नौकरीपेशा हैं, तो उन्हें घर पर बच्चों की देखभाल के लिए भी नौकर रखना पड़ता है। ऐसे में बूढ़े माँ–बाप का उपयोग करते हैं। भागवन्ती का भी यही हाल है।

कहानी में मार्मिकता तब आती है जब ईशरदास बड़े बेटे के पास बड़ी बहू का हाल पूछने जाता है और चाहता है कि वह रात वहीं रुके लेकिन संकोच के कारण खुलकर कह नहीं सका और बड़ा बेटा उनकी भावनाओं को समझे बिना सायंकाल का समय होने पर भी रुकने को नहीं कहता कि पिताजी रुक जाइए, कल चले जाइयेगा या कुछ दिन हमारे यहाँ भी रुक जाइए। पिता–पुत्र का संबंध और संवेदना लगता है मर गयी है, व्यक्ति कितना व्यावसायिक हो गया है। इस संबंध मे कहानीकार लिखते हैं–"उसने बेटे को बता दिया था कि वह कपड़े लाया है, पर बेटे ने कुछ कहा नहीं था। जाने क्यों कुछ नहीं कहा..."[8]

"ईशरदास उठकर खड़ा हो गया, ठीक वक्त पर घर पहुँच ही जाऊँ तो अच्छा है।" "आइए, मैं बस में चढ़ा आऊँ।" बेटा बोला। "नहीं, तुम बैठो।" ईशरदास ने थैला उठा लिया, "अभी दफ्तर से आए हो। थे होगे। फिर बहू भी अकेली है।" "अच्छा, भई..." और वह चल पड़ा। ईशरदास भागवन्ती के बारे में सोचता जा रहा थाकृ"अगर मैं रुक जाता तो उसे और भी काम करना पड़ता–एक आदमी का बोझ और। अच्छा ही हुआ, बेटे ने उसे ठहरने के लिए नहीं कहा।"[9]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'शटल' कहानी वृद्धजीवन की संवेदना का मार्मिक दस्तावेज प्रस्तुत करती है। मनुष्य यह नहीं सोचता कि वृद्धावस्था प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आती है और उन्हें विविध समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। आज की युवा पीढ़ी को बुजुर्गों की मनोभावनाओं को समझने, उनके पसंद–नापसंद का ख्याल रखने तथा उन्हें मान–सम्मान देने की जरूरत है। युवा पीढ़ी अपने स्वार्थों के लिए अपने बड़ों से मदद तो ले लेती है लेकिन जब उनको जरूपत होती है तब अधिकांश युवा पीढ़ी पीछे हट जाती है जो गलत है। जिस प्रकार बाल्यावस्था में बच्चे संवेदनशील होते हैं, उसी प्रकार वृद्धावस्था में भी शारीरिक दुर्बलता के साथ–साथ मानसिक दुर्बलता भी आती है। ऐसे में अपनों की उपेक्षा बुजुर्ग सहन नहीं कर पाते हैं। अतः हमें अपने माता–पिता की उम्मीदों पर खरा उतरने का प्रयास करना चाहिए। माता–पिता के ऋण से तो उऋण होना संभव नहीं है लेकिन हम उनकी सेवा से उस ऋण को कम कर सकते हैं।

संदर्भ–

1. गिरिराज शरण, संपादक, वृद्धावस्था की कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010, पृ. 65
2. वही, पृ. 67
3. वही, पृ. 67
4. वही, पृ. 67
5. वही, पृ.68
6. वही, पृ.68
7. वही, पृ. 71
8. वही, पृ. 72
9. वही, पृ. 73

RRIJM 2015, All Rights Reserved